



सूर्योदय-स्वस्थ बचपन

मासिक न्यूजलेटर

मार्च 2026

अंक-3



अपर मुख्य सचिव की कलम से...



चाइल्ड हेल्थ न्यूजलेटर “सूर्योदय - स्वस्थ बचपन” के इस अंक में स्तनपान विषय और उससे जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में विशेष रूप से बताया गया है। यह विषय न केवल शिशु के समुचित पोषण से जुड़ा है, बल्कि नवजात और शिशु मृत्यु दर में कमी लाने के प्रयासों का एक महत्वपूर्ण आधार भी है।

उत्तर प्रदेश में नवजात और शिशु मृत्यु दर को कम करने तथा पोषण सूचकांकों में सुधार के लिए प्रभावी और साक्ष्य-आधारित गतिविधियों का गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन अत्यंत महत्वपूर्ण है। जन्म के पहले घंटे में स्तनपान शुरू करना (Early Initiation of Breastfeeding) और जीवन के पहले छह महीने तक शिशु को केवल स्तनपान करवाना (Exclusive Breastfeeding) ऐसे प्रमुख उपाय हैं, जो NMR एवं IMR को कम करने के साथ-साथ संक्रमणजन्य रोगों और कुपोषण की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह आवश्यक है कि सभी स्वास्थ्य संस्थानों में SBA प्रोटोकॉल, LaQshya मानकों तथा नवजात देखभाल दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रसवोत्तर सेवाओं का बेहतर अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। विशेष रूप से “गोल्डन आवर” में स्तनपान शुरू करना, प्रीलैक्टियल फीडिंग को रोकना तथा माताओं को सही तरीके से स्तनपान कराने के बारे में परामर्श प्रदान करना बेहद जरूरी है। इसके अतिरिक्त, चिकित्सा शिक्षा संस्थानों के माध्यम से स्वास्थ्यकर्मियों के लिए क्षमता निर्माण, उनके कौशल को बेहतर करने हेतु साक्ष्य-आधारित प्रशिक्षण को और सुदृढ़ करना भी उतना ही आवश्यक है।

समुदाय स्तर पर HBNC और VHSND प्लेटफॉर्म के माध्यम से व्यवहार परिवर्तन संचार को गति देकर लोगों में सही व्यवहार को बढ़ावा देना, साथ ही नियमित निगरानी और डेटा-आधारित समीक्षा से जवाबदेही सुनिश्चित करना, इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम होंगे। आशा है कि इस अंक में दी गई जानकारी से आप सभी लाभान्वित होंगे और इसमें बताई गई बातों को अपने कार्य और व्यवहार में अपनाएंगे।

अमित कुमार घोष (आई.ए.एस.)

अपर मुख्य सचिव,

चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा चिकित्सा शिक्षा,

उत्तर प्रदेश शासन



**6 माह तक
केवल स्तनपान,
और कुछ नहीं,
पानी भी नहीं**



मिशन निदेशक की कलम से...



जन्म के पहले घंटे में स्तनपान की शुरुआत (Early Initiation of Breastfeeding) तथा जीवन के पहले छह महीनों तक केवल स्तनपान (Exclusive Breastfeeding) नवजात एवं शिशु स्वास्थ्य सुधार के सबसे प्रभावी, सरल और किफायती उपायों में से हैं। कोलोस्ट्रम (माँ का पहला गाढ़ा दूध) शिशु को प्रारंभिक प्रतिरक्षा प्रदान करता है और विभिन्न प्रकार के संक्रमणों से सुरक्षा देता है, छह माह तक केवल स्तनपान शिशु के समुचित शारीरिक एवं मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश के अंतर्गत हम सभी स्वास्थ्य संस्थानों में “गोल्डन आवर” (जीवन के प्रथम महत्वपूर्ण 60 मिनट) में स्तनपान सुनिश्चित करने, प्रीलैक्टियल फीडिंग (शहद, घुट्टी इत्यादि) पर प्रतिबन्ध तथा समुदाय स्तर पर जागरूकता बढ़ाने के लिए सतत प्रयासरत हैं। इस दिशा में चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ, एएनएम, आशा कार्यकर्त्रियों एवं सभी सहयोगी कर्मियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। परिवार की भागीदारी, कार्यस्थलों पर निजता को सुनिश्चित करते हुए ब्रेस्ट फीडिंग कॉर्नर की स्थापना सुनिश्चित की जाए।

मैं सभी जनपदों से अपेक्षा करती हूँ कि वे इन प्रमुख सूचकांकों को बेहतर करने के लिए निरंतर प्रयास करें, नियमित समीक्षा करें और उत्कृष्ट कार्य करने वाले संस्थानों एवं कर्मिकों को प्रोत्साहित करें। आइए, हम सभी मिलकर यह सुनिश्चित करें कि उत्तर प्रदेश के प्रत्येक शिशु को उसके जन्म के पहले घंटे में माँ का दूध मिले और वह जीवन के पहले छह महीनों तक केवल स्तनपान से पोषित हो।

डॉ. पिकी जोवल (आई.ए.एस.)

मिशन निदेशक,

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश

जन्म के एक घंटे के अंदर स्तनपान के लाभ



डॉ. सलमान खान
वरिष्ठ बालरोग विशेषज्ञ
वीरगंगा अवंतीबाई महिला
चिकित्सालय, लखनऊ

जन्म के तुरंत बाद जितनी जल्दी हो सके, माँ को स्तनपान प्रारंभ करा देना चाहिए। वर्तमान में 90% से अधिक संस्थागत प्रसव हो रहे हैं, परंतु प्रसव के एक घंटे के अंदर स्तनपान का स्तर केवल 41.6% ही है, जबकि यह 100% होना चाहिए। इस कार्य में हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। प्रसव के एक घंटे के अंदर स्तनपान कराने से शिशु मृत्यु दर को 22% तक कम किया जा सकता है। इससे शिशु को पहला गाढ़ा पीला दूध, जिसे कोलोस्ट्रम (Colostrum) कहते हैं, प्राप्त होता है।



कोलोस्ट्रम के लाभ:

- कोलोस्ट्रम में इम्युनोग्लोबुलिन A, ल्यूकोसाइट्स, मैक्रोफेजेज, लैक्टोफेरिन लाइसोजाइम, ग्रोथ फैक्टर्स तथा विटामिन A, E, K आदि होते हैं। यह शिशु को पैसिव इम्युनिटी (Passive Immunity) प्रदान करता है और शिशुओं को नवजात सेप्सिस (Neonatal Sepsis), दस्त (Diarrhoea) एवं निमोनिया से बचाता है।
- कोलोस्ट्रम नवजात का प्रथम टीका होता है। इससे शिशु का हाइपोग्लाइसीमिया तथा हाइपोथर्मिया से बचाव होता है।
- कोलोस्ट्रम NEC (Necrotizing Enterocolitis) से बचाव करता है।
- कोलोस्ट्रम से शिशु दूध को आसानी से पचा पाते हैं तथा आंतों में अच्छे बैक्टीरिया पनपते हैं।

एक घंटे के अंदर स्तनपान कराने से माँ को लाभ:

- माँ और शिशु के बीच लगाव बढ़ता है।
- ऑक्सीटोसिन हार्मोन बनने लगता है, जिससे प्रसव के बाद रक्तस्राव कम होता है।
- बच्चेदानी/गर्भाशय के संकुचन में सहायता मिलती है।
- जन्म के बाद पहले घंटे में शिशु सक्रिय होता है।

यदि इस समय स्तनपान नहीं कराया गया, तो शिशु सोने लगता है और बाद में स्तनपान कराने में कठिनाई होती है। Early colostrum feeding जीवनरक्षक है तथा नवजात शिशु की जीवनरक्षा (Survival) के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

छह माह तक केवल माँ का दूध (Exclusive Breastfeeding)

छह माह तक शिशु को केवल माँ का दूध देना चाहिए, एक बूंद पानी बिल्कुल भी नहीं। वर्तमान में केवल 57.9% बच्चे ही छह माह तक केवल माँ का दूध पी रहे हैं, जबकि यह 100% होना चाहिए। छह माह तक केवल स्तनपान कराने से नवजात मृत्यु दर में 14% तक कमी लाई जा सकती है। छह माह तक केवल स्तनपान से डायरिया से होने वाली मृत्यु दर में 14.2 गुना कमी तथा निमोनिया से होने वाली मृत्यु दर में 3.6 गुना कमी लाई जा सकती है।

शिशु को होने वाले लाभ:

- संपूर्ण पोषण मिलता है।
- शिशु का आईक्यू बढ़ता है।
- माँ और शिशु के बीच भावनात्मक जुड़ाव मजबूत होता है।
- संक्रमण से सुरक्षा मिलती है।
- एलर्जी, अस्थमा, डायबिटीज, कोरोनरी आर्टरी डिजीज एवं उच्च रक्तचाप जैसी दीर्घकालिक बीमारियों से बचाव होता है।
- यह आसानी से पचता है, जिससे हाइपर बिलिरुबिनेमिया (Hyper Bilirubinemia) का खतरा कम होता है।

माँ को होने वाले लाभ:

- प्रसव के बाद रक्तस्राव एवं खून की कमी को रोकता है।
- जल्दी गर्भधारण की संभावना कम होती है।
- स्तन एवं डिम्बग्रंथि (Ovarian) कैंसर से बचाव होता है।
- वजन संतुलित रखने में सहायता मिलती है।
- टाइप-2 डायबिटीज का खतरा कम होता है।
- रूमेटॉइड आर्थराइटिस का खतरा कम होता है।

अस्पताल के लिए स्तनपान नीति

हमारा अस्पताल निम्न प्रावधानों को सुनिश्चित कर स्तनपान को बढ़ावा देता है, उसकी सुरक्षा करता है और उसका समर्थन करता है:

- जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान शुरू कराना, त्वचा से त्वचा का संपर्क, प्री-लैक्टियल फीड को हतोत्साहित करना तथा डिब्बे वाले दूध पर प्रतिबंध। माताओं को अस्पताल में रहने के दौरान सामान्य एवं सिजेरियन प्रसव दोनों स्थितियों में शिशु को केवल स्तनपान कराने के लिए प्रोत्साहित करना।
- हमारे अस्पताल में जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान की शुरुआत की रिकॉर्डिंग और रिपोर्टिंग के लिए एक प्रणाली स्थापित है।
- हमारे स्टाफ के पास स्तनपान में सहायता करने के लिए पर्याप्त ज्ञान, क्षमता और कौशल है। हम अपनी मातृत्व सेवाओं में प्रशिक्षित कर्मचारियों (MO/SNs/ANM) की उपलब्धता सुनिश्चित करते हैं।
- हम गर्भवती महिलाओं और उनके परिवारों को प्रसवपूर्व क्लिनिक के दौरान स्तनपान के महत्व और प्रबंधन के बारे में सलाह देते हैं।
- हमारा स्टाफ तुरंत, बिना किसी रुकावट के त्वचा से त्वचा संपर्क की सुविधा प्रदान करता है और माताओं को जन्म के बाद जितनी जल्दी हो सके, सामान्य एवं सिजेरियन प्रसव दोनों में स्तनपान शुरू कराने में सहायता करता है।
- हमारा स्टाफ शिशु को सही तरीके से पकड़ने और स्तन से लगाने में आने वाली सामान्य कठिनाइयों का समाधान कर स्तनपान शुरू कराने और बनाए रखने में माँ की सहायता करता है तथा इसके लिए प्रशिक्षित है।
- हम नवजात को प्री-लैक्टियल फीड देने की प्रथा को हतोत्साहित करते हैं। चिकित्सीय कारणों को छोड़कर नवजात शिशु को स्तनपान के अलावा कोई भोजन या तरल पदार्थ नहीं दिया जाता।

- हम माताओं एवं उनके नवजात शिशुओं को 24 घंटे साथ रखने का प्रयास करते हैं। हमारा अस्पताल माँ और शिशु को तब तक अलग नहीं करता जब तक कि चिकित्सीय रूप से इसकी आवश्यकता न हो।
- हमारा स्टाफ माताओं को बोतल, निप्पल और पैसिफायर आदि के उपयोग से होने वाले खतरों के बारे में जागरूक करता है।
- हमारा स्टाफ जन्म के समय कम वजन और समय से पहले जन्मे शिशुओं की माताओं को यह सिखाता है कि स्तन से दूध कैसे निकाला जाए और नवजात को कैसे पिलाया जाए, ताकि शिशु को माँ का दूध ही मिल सके।
- हमारा अस्पताल माता-पिता को अस्पताल से छुट्टी के बाद भी समर्थन और देखभाल के लिए समय पर उचित जानकारी प्रदान करता है। यह जानकारी डिस्चार्ज सारांश में दर्ज होती है।
- हमारा अस्पताल प्रशिक्षित स्टाफ के सहयोग से माताओं एवं देखभालकर्ताओं को स्तनपान व्यवहार के प्रति जागरूक करने के लिए निरंतर प्रयास करता है। स्तनपान संबंधी नीति को प्रमुख स्थानों जैसे लेबर रूम, पोस्टनेटल वार्ड तथा ओपीडी क्लिनिक में प्रदर्शित किया जाता है।
- हमारा अस्पताल सभी दूध पिलाने वाली माताओं (प्रसवोपरांत माताएं, अस्पताल में कार्यरत महिला कर्मचारी जो स्तनपान करा रही हैं) की निजता का ध्यान रखता है तथा उनके लिए ब्रेस्टफीडिंग कॉनर के माध्यम से सुरक्षित और स्वच्छ स्थान उपलब्ध कराता है।
- हम आईएमएस अधिनियम का पूरी तरह से पालन करते हैं और अस्पताल परिसर में किसी भी प्रकार के उल्लंघन की अनुमति नहीं देते, जैसे:
 - “शिशु के स्तनपान के विकल्प”, “दूध की बोतल” और “शिशु आहार” को प्रोत्साहित करना।
 - ऐसे उत्पादों के उपयोग या बिक्री से संबंधित पोस्टर/प्लेकार्ड का प्रदर्शन करना।
 - माँ या उसके परिवार के सदस्य को शिशु फॉर्मूला खिलाने का प्रदर्शन करना।
 - ऐसे उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वित्तीय प्रलोभन देना।
 - ऐसे उत्पादों के निर्माण, आपूर्ति, वितरण या बिक्री से जुड़े व्यक्तियों द्वारा बैठक, सेमिनार, सम्मेलन, कार्यशाला या प्रशिक्षण आयोजित करना।
 - शिशु दूध और भोजन के विकल्प को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य कर्मियों या स्वास्थ्य कर्मियों के संगठनों को किसी प्रकार का योगदान या आर्थिक लाभ देना।

उपरोक्त मुद्दों से निपटने के लिए हमारे अस्पताल में एक नोडल व्यक्ति/समिति मौजूद है।

एन.आर.सी. की समर्पित देखभाल से शिशु अर्पिता को मिला नया जीवन

प्रयागराज मेडिकल कॉलेज के पोषण पुनर्वास केंद्र (NRC) में 3 माह की शिशु अर्पिता को 19 मार्च 2025 को भर्ती किया गया। भर्ती के समय शिशु गंभीर कुपोषण से ग्रसित थी और उसका वजन मात्र 1.27 किलोग्राम था। कमजोर शारीरिक स्थिति और माँ का दूध पर्याप्त न मिलने के कारण शिशु को विशेष पोषण एवं चिकित्सीय देखभाल की आवश्यकता थी।

शिशु का उपचार डॉ. मृदुला व्यास के मार्गदर्शन में एनआरसी टीम द्वारा शुरू किया गया। निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार शिशु की नियमित निगरानी, उचित पोषण प्रबंधन और आवश्यक चिकित्सीय देखभाल सुनिश्चित की गई।

उपचार के दौरान शिशु की माँ को Supplementary Suckling Technique (SST) के माध्यम से स्तनपान में सहायता प्रदान की गई। इस तकनीक की मदद से माँ का दूध पुनः

शुरू कराने (Relactation) का प्रयास किया गया। निरंतर परामर्श और सहयोग के परिणामस्वरूप शिशु ने सफलतापूर्वक माँ का दूध दोबारा लेना शुरू कर दिया, जिससे उसके पोषण स्तर में सुधार आने लगा।

देखभाल और उपचार के दौरान शिशु की स्थिति में धीरे-धीरे सकारात्मक बदलाव दिखाई दिया। उपचार पूरा होने पर शिशु का वजन बढ़कर 1.43 किलोग्राम हो गया और उसकी स्थिति स्थिर पाई गई। वर्तमान में शिशु माँ का दूध अच्छे से ले रही है और उसके स्वास्थ्य में निरंतर सुधार हो रहा है। यह सफलता एनआरसी टीम के समन्वित प्रयासों, समय पर उपचार और मातृ स्तनपान को बढ़ावा देने में किए गए प्रभावी प्रयासों का परिणाम है। ऐसे प्रयास गंभीर कुपोषण से पीड़ित बच्चों को स्वस्थ जीवन की ओर लौटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्य तथ्य:

- शिशु का नाम: अर्पिता, पिता का नाम: रोहित दिवाकर, माँ का नाम: कुसुम
- आयु: 3 माह, जन्म तिथि: 16/12/2024
- भर्ती तिथि: 19 मार्च 2025
- SAM नंबर: 792
- भर्ती के समय वजन: 1.27 किग्रा, डिस्चार्ज के समय वजन: 1.47 किग्रा
- विशेष उपलब्धि: SST तकनीक के माध्यम से सफल Relactation (माँ का दूध पुनः शुरू होना)



भर्ती के समय

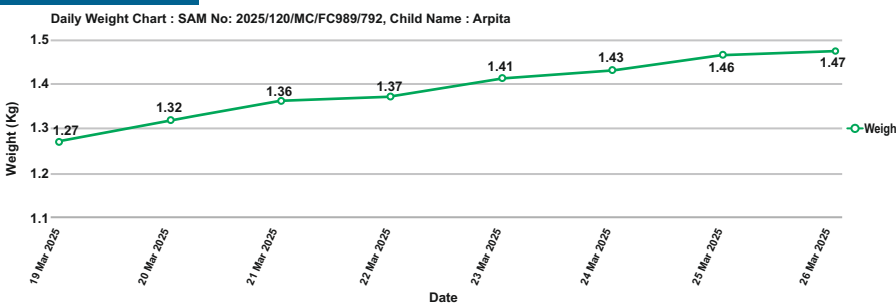


स्टाफ की मदद से SST करते हुए



डिस्चार्ज के समय

Daily Weight Chart



डॉ. मृदुला व्यास



रीता वर्मा
(स्टाफ नर्स)

शिशु आहार सम्बन्धी कानून (IMS ACT 1992 / 2003)

कृत्रिम दूध, शिशु आहार और बोतल की बिक्री एवं उसके उपयोग को बढ़ावा देना आपराधिक कृत्य है।

निर्माता कंपनियों द्वारा	चिकित्सकों/स्टाफ द्वारा
- प्रचार/विज्ञापन - डील व डिस्काउंट - गिफ्ट / उपहार देना - लेबल सम्बन्धी नियमों का पालन नहीं करना - मां एवं समुदाय से सीधा संपर्क करना - डॉक्टरों के लिए सम्मलेन का आयोजन करना	- अनावश्यक प्रचार एवं परामर्श - कंपनी के पैसों से भ्रमण करना - गिफ्ट या अन्य लाभ

- IMS Act का स्वास्थ्य इकाइयों में कड़ाई से पालन किया जाए।
- मुख्य चिकित्सा अधीक्षक एवं ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर इंचार्ज IMS Act के तहत नियमित रूप से निगरानी (Monitoring) करें।
- स्वास्थ्य इकाइयों में कृत्रिम दूध का प्रयोग अत्यंत विशेष परिस्थितियों में डॉक्टर द्वारा लिखित अनुमोदन पर ही किया जा सकता है।



सफलता की कहानी – केवल स्तनपान एवं कंगारू मदर केयर (KMC) के माध्यम से नवजात शिशु के स्वास्थ्य में सुधार

खाण्डसर गाँव, उप-केंद्र खमरिया, ब्लॉक खुटार, जिला शाहजहांपुर में, फ्रंटलाइन हेल्थ वर्कर्स के समन्वित प्रयासों से एक कम वजन वाले नवजात शिशु की स्वस्थ वृद्धि सुनिश्चित की गई, जिसमें नवजात शिशु को केवल स्तनपान कराया गया और कंगारू मदर केयर (KMC) को बढ़ावा दिया गया।

पूजा (पति: देवेश), खाण्डसर गाँव की निवासी, ने 11 जनवरी 2026 को कम्युनिटी हेल्थ सेंटर (CHC) खुटार में एक बच्चे को जन्म दिया। जन्म के समय बच्चे का वजन 2100 ग्राम था, जिसे कम वजन वाला नवजात माना गया। स्टाफ नर्स ने माता और परिवार के सदस्यों को बच्चे की स्थिति के बारे में बताया और उन्हें कम से कम 48 घंटे स्वास्थ्य केंद्र में रहने और देखभाल करने की सलाह दी।

घर लौटने के बाद, आशा वर्कर रोहिणी देवी और आंगनवाड़ी वर्कर पम्मी देवी ने नवजात शिशु के स्वास्थ्य की निगरानी

के लिए नियमित गृह आधारित नवजात देखभाल (HBNC) भ्रमण शुरू किए। इन भ्रमण के दौरान, आशा वर्कर ने माता और परिवार के सदस्यों को शीघ्र स्तनपान एवं केवल स्तनपान के महत्व तथा विशेष रूप से कम वजन वाले शिशुओं के लिए इसके महत्व के बारे में समझाया। उन्होंने बताया कि मां का दूध नवजात के लिए सबसे महत्वपूर्ण पोषण और रोग प्रतिरोधक क्षमता का स्रोत है, जो उन्हें वजन बढ़ाने और संक्रमण से बचाने में मदद करता है।

आशा वर्कर ने मां को स्तनपान कराने की सही स्थिति और तरीके के बारे में भी मार्गदर्शन दिया और इस बात पर जोर दिया कि शिशु को दिन में कम से कम 10-12 बार स्तनपान कराया जाना चाहिए, कोई अन्य भोजन या तरल पदार्थ नहीं दिया जाना चाहिए। परिवार को पहले छह महीनों तक केवल स्तनपान करने के लाभों तथा कम वजन वाले शिशुओं में होने वाले उन खतरनाक लक्षणों के बारे में भी बताया गया जिन पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

साथ ही, आशा वर्कर ने कम वजन वाले नवजात शिशु के लिए कंगारू मदर केयर (KMC) के महत्व पर भी जोर दिया। आशा संगिनी विमला देवी और CHO प्रतिभा के सहयोग से, माता और परिवार के सदस्यों को त्वचा से त्वचा संपर्क प्रदान करने की सही विधि सिखाई गई। उन्हें प्रोत्साहित किया गया कि बच्चा प्रतिदिन कम से कम 6-8 घंटे KMC प्राप्त करे और उन्हें यह भी बताया गया कि परिवार का कोई भी स्वस्थ सदस्य KMC प्रदान करने में माँ की सहायता कर सकता है।

ANM सुनीता देवी और CHO ने निरंतर निगरानी और मार्गदर्शन प्रदान किया, जिससे

यह सुनिश्चित हुआ कि करते हुए कि केवल स्तनपान और KMC दोनों प्रक्रियाओं का सही ढंग से पालन किया जा रहा है। प्रत्येक HBNC दौर के दौरान, आशा वर्कर ने स्तनपान की प्रथाओं की निगरानी की, बच्चे का वजन जांचा और यह सुनिश्चित किया कि KMC

सही तरीके से की जा रही है। परिवार को कम वजन वाले शिशुओं में खतरे के संकेत और समय पर देखभाल की आवश्यकता के बारे में भी शिक्षित किया गया।

नियमित HBNC दौरों, लगातार परामर्श और केवल स्तनपान के साथ कंगारू मदर केयर (KMC) के सही पालन के संयुक्त प्रभाव के कारण बच्चे की स्थिति धीरे-धीरे बेहतर हुई। जन्म के 26 दिनों के भीतर, बच्चे का वजन 2100 ग्राम से बढ़कर 3000 ग्राम हो गया और अब बच्चा स्वस्थ और तंदुरुस्त है।

मां और उनके परिवार ने आशा, आशा संगिनी, CHO, ANM और आंगनवाड़ी वर्कर को उनके निरंतर समर्थन, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। यह सफलता की कहानी इस बात पर प्रकाश डालती है कि केवल स्तनपान और कंगारू मदर केयर (KMC) का संयोजन, सामुदायिक स्तर पर मजबूत फॉलो-अप के साथ, कम वजन वाले नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार ला सकता है।



उत्तर प्रदेश शासन



राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश



सहयोग:

unicef
for every child

Follow us on: x.com/nhm_up youtube.com/NHMUPIEC nhm.up



अपने सुझाव और प्रतिक्रियाएँ ई-मेल करें: newsletter.ch.nhmup@gmail.com